10 जुलाई, 2010 को 1530 बजे विश्वविद्यालय सेमिनार हॉल, कन्नूर विश्वविद्यालय परिसर में जैव-विज्ञान अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र के उद्‌घाटन समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

केरल सरकार द्वार कन्नूर विश्वविद्यालय में स्थापित जैव-विज्ञान अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र के उद्‌घाटन समारोह में भाग लेकर आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। सबसे पहले मैं राज्य सरकार को राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक अध्ययन के आठ क्षेत्रों में अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्रों की स्थापना हेतु उसके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए बधाई देता हूं। स्वायत्त रूप से कार्य कर रहे ये अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र अनुसंधान के विशिष्ट क्षेत्रों में सक्रिय समूहों के सकेन्द्रीकरण एवं विकास को बढ़ावा प्रदान करते हैं। ये विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में शिक्षण, अनुसंधान और विकास के लिए विश्वविद्यालय क्षेत्र में उत्कृष्टता के केन्द्रों को बढ़ावा देते हैं।

इस अंतर-विश्वविद्यालय जैव-विज्ञान केन्द्र से संरचनात्मक जीव विज्ञान और संरचना आधारित औषध खोज एवं अभिकल्पन के क्षेत्रों में विश्वविद्यालय के जैव-प्रौद्योगिकी तथा सूक्ष्म-जीव विज्ञान विभाग द्वारा की गई प्रगति में और भी वृद्धि होने की संभावना है। मुझे यह भी विश्वास है कि इससे उन्नत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की संरचना के भीतर उत्तरी मालाबार क्षेत्र में जड़ी-बूटी संपदा तथा पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को विकसित करने में बल मिलेगा। इसे अंतर-विषयक अध्ययन और अनुसंधान, शैक्षणिक संस्थाओं के साथ आपसी संवाद, राष्ट्रीय प्रयोगशाला प्रणाली एवं उद्योग के संदर्भ में प्राप्त किया जा सकता है।

मुझे आशा है कि अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र प्रमुख शैक्षणिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अतिथि शैक्षणिक कार्यक्रमों को भी बढ़ावा देंगे और शिक्षण व्यवसाय और अध्यापन से जुड़े लोगों की शिक्षा को जारी रखने में सहायता प्रदान करेंगे। अनुसंधान सुविधाओं, कौशल तथा ज्ञान के आदान-प्रदान से व्यापक अर्थ में बेहतर नेटवर्क, बेहतर प्रवीणता और बेहतर उत्पादकता से युक्त विश्वविद्यालय प्रणाली विकसित होने में सहायता मिलेगी। इससे शैक्षणिक जगत और उद्योग के बीच बेहतर वार्तालाप एवं संपर्क को बढ़ावा मिलेगा।

मैं अंतर-विश्वविद्यालय जैव-विज्ञान केन्द्र के प्रयासों की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि कन्नूर जिले के विश्व प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी डा. ई. के. जानकी अम्मल के नाम पर प्रस्तावित हर्बल गार्डन का नामकरण किया जाना उनके लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी।

मैं श्री एम. ए. बेबी और प्रो. पी. के. माइकल थरकन को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज अंतर-विश्वविद्यालय केन्द्र का उद्घाटन करने हेतु मुझे आमंत्रित किया।